

 सत्यमेव जयते	राजस्थान राजपत्र विशेषांक	RAJASTHAN GAZETTE Extraordinary
	साधिकार प्रकाशित	Published by Authority
	पौष 02, शुक्रवार, ११११ १९४४-दिसम्बर २३, २०२२ <i>Pausa 02 Friday, Saka 1944- December 23, 2022</i>	

भाग-1(ख)

महत्वपूर्ण सरकारी आज़ायें।

कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

अधिसूचना

जयपुर, जून २३, २०२२

संख्या प.५(१४) क.सं./२०२२ :-राज्य सरकार द्वारा जारी समसंख्यक अधिसूचना दिनांक २३.०६.२०२२, जो राजस्थान राजपत्र विशेषांक में दिनांक २४.०६.२०२२ के भाग-१(ख) में प्रकाशित हुई, के द्वारा निम्न अनुसूची में भवन व उससे संलग्न संरचनाओं को रक्षित स्मारक घोषित करने के अभिप्राय की सूचना जैसा कि राजस्थान स्मारक, पुरावशेष, स्थान, तथा प्राचीन वस्तु अधिनियम, १९६१ (राजस्थान अधिनियम संख्या १९, सन् १९६१) की धारा ३ की उपधारा (२) द्वारा अपेक्षित है, उक्त भवन व उससे संलग्न संरचनाओं में हित रखने वाले व्यक्तियों को उक्त अधिसूचना के राजस्थान राज-पत्र में प्रकाशित होने की तिथि से २ माह की अवधि में भीतर आपत्तियां प्रस्तुत करने की समय सीमा सुनिश्चित की गई थी।

उक्त अधिसूचना दिनांक २३.०६.२०२२, राजपत्र में प्रकाशन दिनांक २४.०६.२०२२ के दो माह की अवधि में कोई आपत्तियां प्राप्त नहीं हुई हैं।

अतः राजस्थान स्मारक, पुरावशेष, स्थान, तथा प्राचीन वस्तु अधिनियम, १९६१ (राजस्थान अधिनियम संख्या १९, सन् १९६१) की धारा ३ की उपधारा (४) द्वारा प्रदत्त शक्तियां का उपयोग करते हुए राज्य सरकार एतद् द्वारा निम्नांकित अनुसूची में निर्दिष्ट भवन व संरचनाओं को उक्त अधिनियम के तात्पर्य एवं प्रयोजनार्थ रक्षित स्मारक होना घोषित करती है:-

अनुसूची:-

क्र.स.	स्मारक का नाम	तहसील	जिला	महत्व
१.	शिव मंदिर, नागदा, उदयपुर	बड़गांव	उदयपुर	उदयपुर जिले की बड़गांव तहसील के उदयपुर जिले की बड़गांव तहसील के ग्राम नागदा में स्थित प्राचीन शिव मंदिर दो चरणों में बना हुआ है। जिसमें एक चरण लगभग १०वीं से १२वीं शताब्दी एवं दूसरा चरण १४वीं से १६वीं शताब्दी का बना प्रतीत होता है। मातृकाओं को स्तंभों में कलात्मक रूप से अलंकृत किया हुआ है। छतों पर अलंकरण भी काफी कलात्मक लिये हुए हैं। मंदिर का मुख्य शिखर एवं गर्भगृह काफी जीर्णशार्ण है। गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग एवं मंडप में स्थित नंदी दोनों ही खंडित अवस्था में हैं। इसमंदिर परिसर के चारों तरफ के लगभग १०० मीटर परिधि क्षेत्र को नियंत्रित क्षेत्र भी घोषित किया जाता है।
२.	हाडीरानी का महल,	सलूमबर	उदयपुर	सलूमबर हाडीरानी का पवित्र स्थल उदयपुर बांसवाड़ा

	सलूमबर, उदयपुर			मार्ग पर उदयपुर से 70 किलोमीटर दूर एवं पर्यटक स्थल प्रताप स्मारक चांवड (सराडा) से 40 किलोमीटर दूरी है। इस पोल के दोनो ओर तीन मंजिले भवन में लघु कक्ष बने हुए हैं। मुख्य द्वार के प्रथम चौक के बांयी तरफ हाड़ाओं के रहने के मुख्य महल तीन मंजिला बने हुए हैं। इन महलों के सामने ऊंचा प्लेट फार्म बना गया है, जिस पर सीढियों से चढ़ा जाता है। यह महल एवं इसमें बने जालीदार एवं खुल झरोखे बने हुए हैं। इसी महल के निचले हिस्से में लगभग 30 से 32 स्तंभ से एक बड़ा हॉल संभवतः दीवान-ए-खास या मिटिंग हॉल बना हुआ है। इन महलों के ऊपर एक बड़ी चांदनी व उसमें तालाब की तरफ झरोखें एवं कक्ष लगभग 16-17वीं शताब्दी का बना हुआ है। यहां पर एक बड़ा झरोखा जो की तालाब की ओर बना हुआ है जिस पर कांच व आराइश का चपड़ी वाली चित्रकारी छतों पर कुछ अवशेष के साथ दिख रही है। साथ ही हाड़रानी महल परिसर के चारों तरफ के लगभग 100 मीटर परिधि क्षेत्र को नियंत्रित क्षेत्र भी घोषित किया जाता है।
3.	जैन मंदिर, कैलाशपुरी, उदयपुर	बड़गांव	उदयपुर	उदयपुर जिले की बड़गांव तहसील के ग्राम कैलाशपुरी में प्राचीन जैन मंदिर स्थित है। इस जैन मंदिर के पीछे एक छोटा मंदिर है, जो कि इसी जैन मंदिर से संबद्ध प्रतीत होता है। ये जैन मंदिर लगभग 14-16वीं शताब्दी के बने हुए हैं। गर्भगृह में कोई मूर्ति नहीं है। मुख्य मंडप में बायीं तरफ एक स्तंभ पर अभिलेख एवं तीर्थकरों सहित उत्कीर्ण है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर तीर्थकरों की प्रतिमायें खंडित अवस्था में विद्यमान हैं। साथ ही मंदिर परिसर के चारों तरफ के लगभग 100 मीटर परिधि क्षेत्र को नियंत्रित क्षेत्र भी घोषित किया जाता है।

गायत्री राठौड़,
प्रमुख शासन सचिव।

राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर।